निर्माणवादी कक्षा में शिक्षक की भूमिका

दया दवे

अधिगम का सिद्धान्त 'निर्माणवाद' यद्यपि शिक्षा में नवीन संप्रत्यय नहीं है तथापि इस समय विभिन्न स्रोतों से ज्ञानार्जन करनेवाले विद्यार्थियों को दक्ष और सक्षम बनाने में पूर्णरूपेण सहयोगी व प्रासंगिक है। यद्यपि वर्तमान समय में विश्व के अनेक विद्यालयों में उसे क्रियान्वित किया जा रहा है मगर निर्माणवादी सिद्धान्तों के अनुरूप कक्षा–कक्ष प्रबन्धन में अत्यधिक सतर्क रहने की आवश्यकता होती है।

सबसे महत्त्वपूर्ण और ध्यान रखने योग्य कार्य यह है कि विभिन्न विषयों को हस्तान्तरित करनेवाली प्रचलित पाठ्यचर्या को स्वयं सम्पादित करनेवाली पाठ्यचर्या में परिवर्तित कैसे किया जाए? यह एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। ज्ञान के हस्तान्तरण की जगह ज्ञान का निर्माण करवाना इन दोनों बातों के बीच के अन्तर को स्वीकार करना, अपनी सोच को रूपान्तरित करना शिक्षकों के लिए सहज नहीं है। निर्माणवादी विचारक जॉन ड्युई, पियाजे, ब्रूनर तथा वाइगोत्स्की जैसे अनेक चिन्तकों ने निर्माणवादी अधिगम की ऐतिहासिक प्रक्रिया हमें उपलबध कराई है।

अधिगम के इस प्रवर्धित और परिवर्तित ऐतिहासिक क्रम में निर्माणवाद व्यवहारवाद पर आधारित शिक्षा को, संज्ञानात्मक विचारधारा पर आधारित शिक्षा की ओर ले जानेवाला एक अद्भुत 'निदर्शनात्मक स्थानान्तरण' है। इसमें अभी तक बने हुए अधिगम के केन्द्र बिन्दु अध्यापक के स्थान पर विद्यार्थी को कैसे लाया जाए, इस पर दीर्घकालिक श्रम किया गया है। हम तुरन्त आमूलचूल परिवर्तन नहीं कर सकते किन्तु अधिगम की नवीन सोच एवं नवीन सिद्धान्तों की समझ विकसित करने का प्रयास तो कर सकते हैं।

अपनी संकीर्णता को दूर करने तथा निर्माणवादी कक्षा–कक्ष के विविध पक्षों को समझने के लिए अध्यापकों व प्रबन्धकों में स्वतः शोध की प्रवृत्ति विकसित करनी होगी। इस लेख में अपने प्रत्यक्ष अनुभवों से पाठकों को परिचित करवाने की कोशिश की गई है जिसमें निर्माणवादी शिक्षण–अधिगम के अंश सम्मिलित हैं। उन्हें कक्षा कक्ष के तीन उदाहरणों से व्यक्त किया गया है। कक्षा के तीन दृश्य इस प्रकार हैं –

दृश्य एक :

तेज़ गति से आती हुई प्रधानाध्यापिका ने कक्षा में प्रवेश किया और सबकी ओर ग़ुस्से से देखते हुए बोली यह क्या हो रहा है? सब बच्चे ठीक से अपनी जगह पर क्यों नहीं बैठे हैं? इतनी आवाज़ क्यों हो रही है? उस वक़्त दरअसल उस कक्षा में बी.एड. का एक विद्यार्थी (प्रशिक्षणार्थी) अपना शिक्षण अभ्यास कर रहा था। उसने कक्षा के सभी बच्चों को चार समूहों में विभक्त करके बिठा रखा था। प्रत्येक समूह को प्रकरण सम्बन्धी अलग–अलग बिन्दुओं से सम्बन्धित विषय सामग्री दे रखी थी। उस सामग्री का क्या करना हैं, इस सम्बन्ध में प्रत्येक समूह के लिए लपेट फलक पर निर्देश प्रदर्शित किए गए थे। बच्चे अपने–अपने समूह में परस्पर वार्तालाप (संवाद) कर रहे थे और तथ्यों का वर्गीकरण कर रहे थे। हर समूह में एक छात्र एक काग़ज़ पर कुछ लिख रहा था। बच्चे कभी मुड़कर निर्देशों को पढ़ते तो कभी आपस में विचार–विमर्श करते। कभी विवाद करते और फिर सामान्य होते हुए नज़र आ रहे थे। हर समूह अपने–अपने कार्य में तल्लीन था। किसी को भी इस बात की परवाह नहीं थी कि अन्य समूह में क्या हो रहा है तथा कक्षा में कौन आया है? हां, उनके परस्पर संवाद करने से एक अलग ही ध्वनि हो रही थी जो



कक्षा के दरवाज़े तक पहुंच रही थी, जिसे हम शोर–गुल नहीं कह सकते। अचानक प्रधानाध्यापिका की कड़क आवाज़ ने बच्चों का ध्यान विचलित किया और वे असहज से होकर सहम गए। तभी बच्चों के सामने प्रधानाध्यापिका द्वारा गुस्से में कही गई बात सुनकर वहां उपस्थित बी. एड. छात्राध्यापक पहले तो एकदम घबरा गया फिर हिम्मत करके धीरे से बोला मैडम। हमारा लेसन निर्माणवादी विधि पर बना हुआ है और हमें इसी तरह से पढ़ाने के लिए कहा गया है। यह सुनते ही प्रधानाध्यापिका झुंझलाकर बोली। नहीं, नहीं। यह नहीं चलेगा। ये कैसा निर्माणवाद है? सारे बच्चे चिल्ला रहे हैं और कुछ भी कर रहे हैं। सारा अनुशासन ख़राब हो रहा है और आप खड़े–खड़े देख रहे हैं आप तो इनकी आदत बिगाड़कर चले जाओगे और वापस इन्हें ठीक करने में कितना समय लगेगा आपको इस बात का ज़रा भी अन्दाज़ा है? हमने आप लोगों को पढ़ाने की परमिशन दी है और आप निर्माणवाद के नाम पर कुछ भी कर रहे हैं। इन्हें चुप करो और पढ़ाओ। अगर पढ़ा हुआ पाठ है तो रिवीज़न करवाओ। छात्राध्यापक उन्हें कुछ समझाने की चेष्टा कर ही रहा था कि प्रधानाध्यापिका ग़ुस्सा करती हुई कक्षा से बाहर निकल गई।

दृश्य दो :

प्रधानाध्यापिका जब सीढ़ियां चढ़कर ऊपरवाली विंग में अन्य कक्षा में पहुंची तो वहां भी उन्हें कक्षा में कुछ ऐसा ही दृश्य देखने को मिला जो पिछली कक्षा में दिखाई दिया था। उन्होंने कक्षा में प्रवेश किया किन्तु उन्हें वहां कोई अध्यापक दिखाई

नहीं दिया। सभी विद्यार्थी तीन–तीन के समूह में बैठे हुए थे तथा उनके पास न्यूज़पेपर्स व मैग्ज़ीन की कटिंग तथा कुछ चित्रादि रखे हुए थे। विद्यार्थी उन पर चर्चा कर रहे थे। वे कभी एक–दूसरे के विचार से सहमत हो रहे थे तो कभी असहमति जता रहे थे। कभी सोचते हुए नज़र आ रहे थे तो कभी प्रश्न पूछ रहे थे। बीच–बीच में उन्हें हंसी भी आ रही थी और आनन्द भी। उनके परस्पर संवादों से ध्वनि अवश्य उत्पन्न हो रही थी। यह सब देखाकर प्रधानाध्यापिक और भी ग़ुस्सा होती हुई तेज़ आवाज़ में बोली – अभी किसका पीरियड है? आप लोग चुपचाप नहीं बैठ सकते? यह सुनते ही उस कक्षा में मौजूद बी.एड. का एक छात्राध्यापक जो किसी समूह के कोरम की पूर्ति करने के लिए प्रतिभागी बना हुआ था, एकदम खड़ा हो गया और बोला – मैडम, मेरा पीरियड है। अरे! आपका पीरियड है तो आप वहां बैठे क्या कर रहे हैं? यहां (श्यामपट्ट के समक्ष इशारा करते हुए) आकर पढ़ाते क्यों नहीं? ऐसा प्रधानाध्यापिका चिढ़कर बोली। छात्राध्यापक थोड़ा रूढ़ स्वभाव का था, उसने पलटकर कहा – पढ़ा ही तो रहा हूं। प्रधानाध्यापिका थोड़ा नाराज़ हुई और बोली – इसे पढ़ाना कहते हैं? आप बच्चो के साथ बैठे बतिया रहे थे और सब से झूठ बोल रहे हैं? छात्राध्यापक ने तत्काल बच्चों से पूछा – अच्छा बच्चो। बताओं कि अपन (हम) क्या कर रहे थे? बच्चे बोले– सर, हम इन चित्रों और पेपर कटिंग आदि को देखकर सोच रहे थे तथा इनसे कितनी बातें कही जा सकती हैं, वह आपस में बता रहे थे। क्योंकि सर ने कहा था कि जो समूह जितनी अधिक जानकारी देगा वह प्रथम स्थान प्राप्त करेगा।

प्रधानाध्यापिका को विद्यार्थियों की बात अच्छी नहीं लगी। वह छात्राध्यापक को झिड़कते हुए बोली – क्या सब काम आप बच्चों से ही करवाएंगे? आप क्या करेंगे? यह कैसी ट्रेनिंग है? आप तो कक्षा में कुछ करते हुए नज़र नहीं आ रहे हैं? आपके सुपरवाइज़र कहां है? उनसे बात करनी पड़ेगी। इस तरह धमकी भरे शब्द बोलती हुई वह सुपरवाइज़र को तलाशती हुई कक्षा से बाहर निकलने के लिए बढ़ी ही थी कि अगले कालांश की घण्टी बज गई। कक्षा में बच्चों का शोर आरम्भ हो गया किन्तु कुछ बच्चों की बातें उन्हें सुनाई दे रही थी जिनमें वे छात्राध्यापक से कह रहे थे – सर कल आप क्या पढ़ाएंगे? कल भी हमारे लिए ये सारी चीज़े लाएंगे? कोई कह रहा था सर में भी ला सकता हूं। अब आवाज़ धीमी होती हुई बन्द हो गई थी और प्रधानाध्यापिका चार–पांच कक्षों के आगे तक जा चुकी थी। अगले कालांश के छात्राध्यापक कक्षा में प्रवेश कर चुके थे।

दृश्य तीन :

प्रधानाध्यापिका चूंकि सुपरवाइज़र को ढूंढ़ रही थी, अतः अगली कक्षाओं तक बढ़ती जा रही थी। एक कक्षा की खिड़की के पास रुककर कक्षा में देखने लगी। उसने देखा कि एक छात्राध्यापिका को बच्चों ने घेर रखा है और वे किसी कार्य को स्वयं करेंगे। उसी कक्षा में पहले से पीछे बैठा हुआ सुपरवाइज़र प्रधानाध्यापिका को खिड़की में से दिखाई नहीं दे रहा था। किन्तु छात्राध्यापिका तथा बच्चों को मालूम था। छात्राध्यापिका ने एक विद्यार्थी को अपने समक्ष बुलाया और दोनों ने मिलकर एक संवाद पढ़कर बच्चों को सुनाया। फिर सभी छात्रों को दो–दो के समूह में बांटकर अलग–अलग संस्थिति के संवाद लिखने हेतु कहा। बच्चे अपने पसन्द के प्रकरण पर लिखने के लिए थोड़ा शोर करने लगे प्रधानाध्यापिका कक्षा का यह दृश्य देखकर आपे से बाहर हो रही थी किन्तु पता नहीं क्या सोचकर धीरज रखती हुई वहीं खड़े होकर कक्षा में होनेवाली गतिविधि को लगातार चुपचाप देखती रही। दस मिनट के अन्दर विद्यार्थियों ने अपने संवाद लिखे। इस प्रक्रिया में छात्राध्यापिका निरन्तर सबका सहयोग कर रही थी। कक्षा में हल्की ध्वनि बराबर हो रही थी। प्रत्येक समूह को अपने संवाद प्रस्तुतीकरण के अवसर दिए गए जिसमें प्रत्येक को एक–एक मिनट लगा। छात्रों के चेहरों पर अपने संवाद प्रस्तुत करते हुए विजय के भाव देखे जा सकते थे। यह सब देखते–देखते प्रधानाध्यापिका का रुख़ कुछ नरम होता हुआ सा नज़र आने लगा। इस तरह बच्चों को अपने सहपाठियों से मिलकर कार्य करते हुए, शिक्षक के साथ सहज रहते हुए, अगले दिन के पाठ को पढ़ने के लिए जिज्ञासु होते हुए तथा उत्साहित देखकर उन्हें अच्छा लगने लगा। मन में जो सन्तोष और आनन्द का भाव उठ रहा था वह उनके चेहरे

पर दिखाई देने लगा। ऐसा लग रहा था कि कक्षा–कक्ष की यह अध्यापन शैली उन्हें प्रभावित कर रही थी। इतने में कालांश समाप्त हो गया। उस कक्षा से बाहर निकलते हुए सुपरवाइज़र को आश्चर्य से देखती हुई प्रधानाध्यापिका बोली – अरे! आप अन्दर ही थे? मैं आप को ही ढूंढ़ रही थी। सुपरवाइज़र ने कहा – कहिए क्या काम है? प्रधानाध्यापिका का ग़ुस्सा काफ़ूर हो चुका था फिर भी उसने कहा कि – आपके विद्यार्थी जब कक्षा में पढ़ाते हैं तो अनुशासन कुछ ठीक नहीं रहता हैं। अध्यापक की सक्रियता नज़र नहीं आती। विद्यार्थी ही विषयवस्तु को समझने, जानने और बताने का उपक्रम कर रहे थे। एक दृष्टि से ऐसा शिक्षण अच्छा है किन्तु अध्यापक के शिक्षण कौशल की पहचान कैसे की जा सकती है? सुपरवाइज़र ने उन्हें बीच में रोकते हुए कहा कि – यदि बच्चों को स्वप्रेरित होकर सीखने के लिए अध्यापक तैयार कर लें तो यही तो अध्यापक का कौशल है। काम करना आसान है किन्तु करवाना मुश्किल होता है। हम शिक्षक बच्चों पर ज्ञान थोपते आए हैं। हम जैसा चाहते हैं वैसा ही उन्हें बनाते हैं। उन्हें स्वयं की समझ, ज्ञान, कौशल व अभिवृत्ति आदि के निर्माण का अवसर ही नहीं देते। बच्चों को केवल आदेश देने से काम नहीं चलता अपितु उनके सीखने की प्रक्रिया में अध्यापक को सहभागी बनना पड़ता है। वह उनके बीच रहकर ही जान सकता है कि बच्चे समूह में कार्य करते हुए किन तरीक़ों से सीखते हैं? उन तरीक़ों की पहचान करना व उन्हें शिक्षण में अपनाना ही निर्माणवादी शिक्षक का कार्य है। यही सामाजिक निर्माणवाद है।

सामाजिक निर्माणवाद

सामाजिक निर्माणवाद में विद्यार्थी समूह में विभिन्न गतिविधियों में सक्रिय रहते हुए अवलोकन, चिन्तन करते हैं, मौलिक विचारों को अभिव्यक्त करते हैं। वैचारिक संघर्ष करते हैं, प्रश्न करते हैं, प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं, चर्चा करते हैं तथ्यों की खोज करते हैं, दूसरों की बात समझने का प्रयास करते हैं, निर्णय लेते हैं, दूसरों पर अपना प्रभाव जमाते हैं, एक दूसरे की मदद करते हैं, तर्क करते हैं। और इस प्रकार अनायास ही सामाजिक सन्दर्भों में अपने दायित्वों के निर्वाह में दक्ष होते जाते हैं।

हमारी शिक्षण व्यवस्था में एक ओर अच्छे पाठ्यक्रम का अभाव है तो दूसरी ओर पुराने ढर्रेवाली शिक्षण पद्धतियां हैं जो ऊबाऊ हैं और झुंझलाहट पैदा करती हैं। वर्षों से प्रयुक्त अप्रासंगिक पद्धतियां और हमारे शिक्षकों की अपेक्षाएं कक्षा में नीरस वातावरण ही उत्पन्न नहीं करती अपितु कई सवाल भी खड़े करती है। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं–

प्रचलित शिक्षा पर कुछ सवाल

प्रचलित विद्यालयों में कक्षा–कक्ष की स्थिति का जब अवलोकन करते हैं तो कई सवाल पैदा होते हैं। जैसे – क्या कक्षा में विद्यार्थियों का चुपचाप बैठे रहना अनुशासन है? क्या उनसे एक समान कार्य करवाकर शिक्षण सम्पादन करना ही सिखाना है? क्या कक्षा में बच्चों द्वारा संवाद व प्रश्न न करके अपनी जिज्ञासाओं को कुण्ठित बनाए रखना अनुशासन है? क्या कक्षा में बच्चों का कृत्रिम व्यवहार ही व्यावहारिक कौशल है? क्या बच्चों द्वारा अध्यापक के प्रश्नों के उत्तर न दे पाना अपराध है? क्या अध्यापक जो पढ़ाता है वही जानना ज्ञान है? क्या अध्यापक जिस तरह से सिखाता है, उसी तरह से सीखना कौशल है।

ऐसे कई सवाल सिखाने व सीखने की प्रक्रिया पर उठ सकते हैं। अध्यापक का दमनकारी व्यवहार विद्यार्थियों की मौलिकता पर कुठाराघात करता है। यदि हम बच्चों को वयस्क न मानकर बच्चा मानकर पढ़ाएं तो उनका सहज व स्वाभाविक विकास करना आसान हो सकता है। सीखने में उनकी सहज गतिविधियों को ही माध्यम बनाकर पढ़ाना निर्माणवादी शिक्षण है।

दया दवे., विद्या भवन गोविन्दराम सेकसरिया शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, उदयपुर में पढ़ाती हैं।